International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 6, June 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भीष्म साहनी के नाटकों में रंग मंचीयता

डॉ. पूरण मल वर्मा, सह-आचार्य ,हिंदी

राजकीय महाविद्यालय,टोंक

प्रस्तावना

नाटक परंपरा के उद्भव विकास के बाद ही स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में यह पहला नाटक है जिसमें यांत्रिक अभियांत्रिकी एवं चरित्र उद्घाटन के माध्यम से पात्रों को यथार्थ स्वीकृति को प्रदान करता है।जैसे कि हानूश है वह गरीब है,किंतु वह बुद्धिजीवी भी है। एक घड़ी बनाता है और उस घड़ी के माध्यम से जीवन के विभिन्न संदर्भों को प्रस्तुत करता है। भारतीय संस्कृति संस्कार स्वभाव से रिश्तो को जोड़कर चलता है। मानवीय संवेदनाओं से जुड़ी समस्याओं को अवगत कराता है भीष्म साहनी जी ने अपने सभी नाटकों के चरित्रों कायथासंतन किया है किंतु माधवी रंग दे बसंती चोला एवं अनुज नाटकों में वर्तमान परिस्थितियों एवं देशकालीन परिस्थितियों का तुलनात्मक वर्णन चरित्र के माध्यम से रंगमंचीय के दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत है। कबीरा खड़ा बाज़ार में तथा माधवी मानवीय संबंधों को मजबूत बनाने में समाज को एक नई दिशा की ओर ले जाने का प्रयास किया है।जिनके छोटे छोटे संवाद प्रस्तुत है।

नीमा : आ गया, बेटा ?

आगे बढ़कर उसकी ओर जाती है।

कबीर : हाँ, माँ !

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 6, June 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नीमा: आ, इधर बैठ जा। मैं सत्तू बना लाती हूँ तेरे लिये । अन्दर चली जाती है ।

नूरा : तीनों थान बिक गये ? हम साया तो कह रहा था बाजार में बड़ी मन्दी है । उसका एक भी नहीं बिका । : नहीं तो । कबीर

हैरान होकर

क्या कोई आदमी यहाँ थान नहीं पहुँचा गया ? नूरा : थान तो तू लेकर गया था ।१

माधवी मानवीय मूल्यों को बदलने वाला परिवेश में महिला वर्ग को प्रभावित करने वाला नाटक है। रंग दे बसंती चोला में स्वतंत्रा संग्राम सेनानी और संस्कारों को भारतीय जनता युवा पीढ़ी के रिश्तों पर असर पड़ता है क्योंकि वह प्रथम दृष्टया धार्मिक सांप्रदायिक तनाव से मुक्ति मिल जाएगी यह सोच कर भारत विभाजन हुआ।भीष्मसाहनी ने साहित्य की सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। समकालीन प्रवृत्ति के अंतर्गत केन आंखों में मन संप्रेषण का सिर्फ भाषा तथा अभिनेयता की दृष्टि से उचित पहचान बनाई है यह सिद्ध नाटककारों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले नाटकार हैं। इनके नाटक माननीय धरातल पर खरे उतरते हैं। उनका प्रमुख नाटक हानूश का केंद्रीय पात्र हानूश ही है वह एक जीवंत प्राणी के रूप में दिखाई देता है। उसके चरित्र को लेकर के जो विष्णु जी ने कहा है वह शाश्वत सत्य है।"यह नाटक ऐतिहासिक कहना है कथानक के तत्वों को छोड़कर लगभग सभी कुछ काल्पनिक है नाटक एक मानवीय स्थिति को मध्ययुगीनपरिपेक्ष में दिखाने का प्रयास मात्र है"२ इस नाटक को पहली बार दिल्ली के दर्शकों के सामने अभियान द्वारा श्री राम सेंटर फॉर आर्ट कल्चर द्वारा आयोजित प्रथम राष्ट्रीय नाटक समारोह के अवसर पर 18-19 फरवरी को 1977 को पेश किया गया। जिसका निर्देशन अभियान के सुयोग्य प्रस्तुत नाटक के माध्यम से अनुज को न दिखाकर परिवार जन पत्नी का क्या पुत्र ज्ञान का और पादरी को दिखाया गया है

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 6, June 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जिसकी बात से ही दर्शक पाठक खान उसके लिए एक नई जिज्ञासा लेकर सोचने लगता है तथा इसके पहले ही चरित्र का चित्र सहित जाता है और नाटककार जिस तन में आफरीन और प्रिया काम भावना में डूबी स्थिति है उसका परिचय करवाता है जिस प्रकार गाड़ी ठीक करते समय बार-बार बंद होती है चलती है उसी से हम उसके व्यक्तित्व एवं उसके कला प्रिय मन के संघर्ष और बेचैनी को प्रस्तुत किया गया है। यहां भीष्म साहनी जी ने एक कलाकार की कला को नए स्वरूप में प्रस्तुत कर तकनीकी कला मानसिक उन्नयन एवं सभी विषयों से सरोकार रखने वाली विद्वता का परिचय दिया है। भीष्म साहनी जी ने विविध विधाओं में अपनी लेखनी चला कर के और साहित्य मर्मज्ञ होने का सबूत पेश किया है वह इस प्रकार है साहित्य जीवन से ही जन्म लेता है लेकिन जीवन को अमूर्त अवधारणा नहीं है तरह तरह के अनुभव घटनाएं आपसी रिश्ते मानव समाज के भीतर चलने वाले संघर्ष विसंगतियां और अंतर विरोधी विडंबना आदि सभी जीवन की परिधि में आती हैं यह सब लेखक के सम्मेलन को कहीं छूते हैं उद्वेलित करते हैं। इन्हीं के आधार पर लेखक के संवेदन की अभिव्यक्ति मिलती हैं। जीवन दर्शन मार्क्सवाद और विभाजन के बाद की परिस्थितियों से प्रभावित रहा है पश्चिम की माओवादी चेतन परंपरा की अगली कड़ी के रूप में हैं जो अमानुष एक वर्ग भील समाज व्यवस्था के अंत का आर्थिक समानता और मनुष्य की मानवीय गरिमा और शक्ति में विश्वसनीयता लाती है। हालत घड़ी को ठीक करता है किंतु वह बार-बार खराब हो जाती है बंद हो जाती है हम उसके व्यक्तित्व उसके कलापी अमन के संघर्ष वेतन और बेचैनी को दर्शाता है। उपकरणों को छू ले उसकी रचना एकुलता तन में ताकत बार-बार उसके मन में आते हैं यद्यपि वह आर्थिक और पारिवारिक संकट के साथ बाहरी दबावों के बीच भी अपने कार्यक्रम को करता है वह नहीं जानता कि दुनिया में कोई क्रांतिकारी परिवर्तन या विकास लाने के लिए यह घड़ी साल का काम कर रहा है कि घड़ी बना करके दुनिया कुछ नया करके दिखाएगा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 6, June 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बाहरी पति और उसके भेद करती है अंकित करती है उसके मन में उत्पन्न होता है जो उसके जीवन में काफी परिवर्तन ला देता है। " हमें जो मिला नसीहत करने वाला ही मिला आखिर इस छोटे से दिमाग में कितनी नसीहत समा गई समा पाएगी।"३ लगभग 500 वर्ष पहले राजनगर में अनुष्का नाम का एक ताला मिस्त्री था उसका एक भाई था परिवार में पत्नी और एक बच्ची थी बाद में एक निराश्रित जैकब को भी परिवार में रख लिया गया तो ताले बनाने का काम करता था और कात्या उसके घर बाजार में बेस्ट आती और इस प्रकार पारिवारिक खर्च चलता। हां उसने कई लोगों से घड़ी बनाने की चर्चा सुनी तो उसमें भी यह महत्वकांक्षी जागी कि वह भी घड़ी बनाएगा उसने नगर के गणित के टीचर से हिसाब किताब की बातें समझी लोहार से आवश्यक औजार लिए पादरी भाई की सहायता से चर्च मैदान उपलब्ध करवाया और घड़ी बनाने का काम में लग गया उसका परिवार घोड़ा चिंताओं से गुजर रहा था क्योंकि घर में एक ही काम आने वाला था और अब शादी का कार्य करके घड़ी बनाने का कार्य कर रहा था के लिए पुण्य कार्य रहा फिर से मिलने वाला अनुदान घर खर्च के लिए घड़ी पदों के लिए पर्याप्त नहीं था चेकअप को काला बनाने के लिए परिवार ने रख लिया तो पुराना फिरसे चालू होने लगा और कुछ राहत मिली लेकिन 15 16 वर्ष की गरीबी हालत से गुजर चुके जिक्र किया जाने से हंस को काफी सहयोग मिला और उसे अपने काम में लग गया बनाने के लिए सहायता दिलाई गई स्थापित की जाएगी अपने काम में सफलता के प्रति और ईमानदारी से करने लगा। कातिया द्वारा कही बात को ध्यान देखें

कात्या: पिछले दससाल से यही सुन रही हूं मैं बहुत उपदेश सुन चुकी हूं।क्या मैं अपने लिए उससे कुछ मांगती हूं? घर में खाने को ना हो तो मैं अपनी बच्ची को कैसे पालना? मुझे सभी उपदेश देते रहते हैं मेरा बेटा सर्दी में जुट होकर मर गया जाड़े के दिनों में सारा वक़्त हंसता

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 6, June 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रहता था घर में इतना अंदर भी नहीं था कि मैं कमरा गर्म रख सकूं हम सालों से लकड़ी की खपत से मांग कर आती रही।

पिछले दरवाजे में, दुबली-सी पन्द्रह साल की बेटी आकर सहमी सी खड़ी हो जाती है।

छ महीने तक मैं बच्चे को छाती से लगाए घूमती रही किधर गया मेरा मासूम बेटा मैं इसकी घड़ी को क्या करूं क्या मैं इससे कुछ अपने लिए मांगती हूं मैंने अपने लिए कभी से जवाब मांगा है या कपड़ा मांगा है पर कौन मां अपने बच्चे को अपनी आंखों के सामने टूटता देख सकती है?४ पादरी,कात्या,यान्का,लौहार ओर हानूश पर संवाद घड़ी को लेकर नई चेतना की जागृति की बात करता है तो उसका उत्साह वर्धन करते हैं। हंस नाटक में साहनी जी ने एक घड़ी के माध्यम से मध्यम वर्गीय निम्न परिवार की मनोरथा को छोटे-छोटे संवादों में वकील करके हंस के चरित्र की विशेषताओं को प्रकट किया है।

लौहार: क्या है?

हानूश: तुम्हें नजर नहीं आ रहा ?

लौहार: समझ गया सड़कों पर से लीवर के साथ नहीं बांधा,कमानी के साथ बांधा है।

हानूश: बस, यही

लौहार: इससे क्या होगा?

हानूश: इससे, पेंडल उनकी रफ्तार में कभी फर्क नहीं पड़ेगा।बराबर आते जाते एक जैसा वक्त लेगा।

लौहार: रुकेगी भी नहीं? ५

छोटे-छोटे संवाद एवं मनुष्य के द्वारा घड़ी का टिक टिक सुनाई देना यान काका भागकर पास आ जाना का तेल और हम उसके भाई की अपनी जगह से हम उसको खड़े देखना छोटी बातें हैं जिनके द्वारा साहनी जी ने संवादों के माध्यम से हंस की चारित्रिक विशेषताओं को प्रकट करने का प्रयास किया है। संदर्भ में देखा जाए तो आज यदि मुस्लिम संस्कृति के लोग हानूश की तरह कार्य करें और तो उनके मन में भी देशभक्ति की भावना होगी नए नए उपकरणों को तैयार कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी सामने आएगा। बातों से हां उसके घर वालों घर बाहर की समस्याएं एवं आर्थिक स्थिति को विष्णु साहनी ने आम आदमी की स्थिति के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जो घर में आग जल्दी है ना खाना बन पाया है कितने दिन हो गए हैं छोटे-छोटे बच्चों की पेट की भूख को शांत करने के लिए क्या-क्या कार्य करने पड़ते हैं इस प्रकार उन्होंने जो प्रस्तुतीकरण दिया है वह आम आदमी के जीवन को प्रभावित करता है। हंस का जीवन संघर्ष में रहा है और उसकी जो विकासवादी सिद्धांत की अवधारणा है वह उसे कहीं के अपमानित भी करती है अनादर भी होता है उस अनादर को चार्ज के द्वारा कहा गया है।"हां उसने यह सब कुछ ही दिन पहले मुझे खुद सुनाई लाख पादरी ने कहा कि घड़ी बनाने की कोशिश करना ही खुदा की तोहीन करना है भगवान ने सूरज बनाया है चांद बनाया है अगर उन्हें घड़ी बनाना मंजूर होता तो क्या वह घड़ी नहीं बना सकते थे उनके लिए क्या मुश्किल था इस वक्त आसमान में घड़ियां ही घड़ियां नहीं होती सूरज और चांद भी भगवान की दी हुई गाड़ियां हैं जो भगवान ने घड़ी नहीं बनाई तो इंसान का घड़ी बनाने का मतलब ही क्या है उस वक्त तो यह कहता था।६ 17 वर्ष में न जाने कितनी बार उसने घड़ी बनाने का निश्चय छोड़ दिया क्योंकि उसको आर्थिक विपन्नता के कारण कष्ट हो रहा था उपकरण आदि नहीं मिल पा रही थी इसी कारण से निराश और हताश हो गया फिर भी एक अजीब सी अनजानी शक्तियों से खींचकर घड़ी की ओर मन प्रसन्न हुआ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 6, June 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कात्या: कहती है पिछले 10 साल से यही सुन रही है मैं आपकी बहुत उपदेश सुन चुकी हूं क्या मैं अपने लिए कुछ मांगती हूं घर में खाने की ना हो तो मैं अपनी बच्ची को कैसे पा लूं मुझे भी सभी उपदेश देते रहते मेरे बेटा सर्दी में हो गया। इस प्रकार का ताकि मन में न जाने कितनी है मानसिक विधाएं हैं जो उसे इस तरह का विद्रोह करने के लिए प्रेरित करती हैं। नाटककार साहनी ने हाल में मेरा कांक्षासजनधर्मिता और उसके प्लस करण का एक भयंकर यथार्थ प्रस्तुत किया है एक और मन में तनाव है विचार है परिवार की गरीबी अवमानना का तिरस्कार उपेक्षा होती है लेकिन वह अपने कार्य के प्रति ईमानदारी से लगा हुआ रहता है।नाटक अकादमी एक कलाकार की जीती जागती मनोवृति युवाओं को विभिन्न दृश्यों पात्रों के माध्यम से घटनाओं को गणित करते हुए हाल उसके इर्द-गिर्द सारे कथा को सुनने का प्रश्न किया है साथ ही उसे मिले विचित्र ऊपर को भी दिखाया है क्योंकि वह एक युवा पीढ़ी के व्यक्ति को जीवन में किस-किस प्रकार समस्याएं आती है उसके बाद भी वह जीवन संघर्ष करता हुआ अपनी मंजिल को हासिल कर लेता है वह अपने परिवार ही नहीं अपने राष्ट्र का भी नाम रोशन करता है तो भावी पीढ़ी को यह कार्य देखकर के प्रेरणा लेनी चाहिए। डाबर जान सब्जी पोशाक आदि चित्रों के माध्यम से विष्णु साहनी ने हानूश नाटक में चारित्रिक सृष्टि को मानवीय संवेदना से जोड़कर वैदिक संवेदना तक ले जाने का जो प्रयत्न किया है वह नाटक साहित्य में अद्वितीय प्रतिभा का परिचय है। टावर जंजाल आदि की पर्स पर जब बातें होती हैं तो जान कहता है।

जान: तुम भाग गए हो टावर हर आदमी के अंदर दस्तार भी होता है और राग दरबारी भी और मैं तो कहूंगा पादरी भी आज हानूशदस्तकार है तो हमारा साथी है कल महाराज ने उसे दरबारी बना दिया वह जमीन जायदाद का मालिक बन गया तो उसके अंदर का दरबारी जाग उठेगा और अगर उसके अंदर का पाखंड बढ़ने लगा तोएक दिन उसके अंदर का पादरी भी

जाग उठेगा।७ प्रकार धर्म संप्रदाय जाति एवं अभिमान को छोड़कर व्यक्ति जीवन में यदि आगे बढ़ता है तो उसको सब कोई उसका समर्थन करेगा अन्यथा उसके अहंकार का विनाश निश्चित है। आज जान जानटावर बात करते हैं हानूश की विशेषता को देखकर कहता है टावर के बेटे के साथ अपनी बेटी का रिश्ता करने के लिए हर बात का दारोमदार हानूश पर है। सामाजिक एकता अपनत्व का भाव मित्रता एवं सबसे हिल मिलकर चलने की प्रवृत्ति हां उसको एक बड़ा आदमी बना देती है और वह समाज में एक शेष शक्ति के रूप में समझा जाता है। जब हालु घूमता हुआ गली में जाता है नगर पालिका क्षेत्र में तो लोग उसे दुआएं देते हैं।

पहली आवाज: जुग जुगजियोहनोस नगर को चार चांद लगा दिए फूलों का गुलदस्ता फेंकता है इसलिए दरवाजे में से मनुष्य कमरबंद बनता हुआ आता है सब कुछ थका हुआ था लग रहा है दाढ़ी के बहुत से बाल सफेद हो चुके हैं पीछे पीछे सुई धागा लिए कात्या व्यस्त से चली आ रही है वह भी अब तक किसी अधेड़ उम्र की स्त्री लग रही है। की गरीबी अच्छे अच्छे व्यक्ति को तोड़ देती है फिर उम्र का तकाजा है वह कहां जाएगा फानूस उन सब का गुलदस्ता लेकर के हाथ जोड़कर सभी का अभिवादन करता है मुबारकबाद देते हैं लोग बाग यह तुमने कैसे बनाई है अनुज बना दी तो जैसे तैसे बन गई यह सब छोटी छोटी बातें। के माध्यम से भीष्म साहनी जी ने बना दी है कि युवा पीढ़ी का हर व्यक्ति जीवन में नई संवेदना के साथ में नई ऊर्जा के साथ में वह नए-नए आविष्कार कर अपने परिवार समाज और राष्ट्र का नाम ऊंचा कर सकता है बशर्ते कि उसे सुविधाएं मिलनी चाहिए गांव का भाव रहेगा तो वह जीवन में अच्छे कार्य नहीं कर सकता। भीष्म साहनी जी ने अधिकारियों के माध्यम से पादरी के यान के मिल के माध्यम से बार-बार बधाइयां दी जा रही है अधिकारी वर्ग उसके विशेषता को बार-बार दोहरा रहे हैं तुमने घड़ी बनाई है मुबारक हो मैं नगरपालिका की तरफ से तुम्हें लिवाने आया हूं बादशाह सलामत की नजर हुई तो तुम्हारी यह मुफलिसी खत्म हो जाएगी मैं अपने बेटों से

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 6, June 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कहा करता हूं कि मेहनत करना गरीबों से सीखो गरीब लोग मेहनत करना जानते हैं। ८ कार गरीब आदमी जरूरी नहीं है कि वह अच्छा काम नहीं कर सकता और इसका ज्वलंत उदाहरण है हमारे भारत के राष्ट्रपति डॉ अबुल कलाम आजाद जो गरीब घर से थे मछली पालन करते थे और भारत के प्रमुख व्यक्ति बने बहुत बड़े वैज्ञानिक बने जो पूरा विश्व उनको जानता है अनिल जी का उद्देश्य है कि क्वालिटी कहीं भी हो सकती है गरीब गर्मी हो सकती है अमीर गरीब हो सकती है गरीब का बच्चा से बाहर निकलकर और नाम रोशन करता है तो देश समाज परिवार सभी को प्रसन्नता होती है। पचावली संवेदना को प्रसन्न करने के लिए कोई आगरा या शिल्पगत प्रयोग प्रवृत्ति का प्रयोग नहीं किया है ना बौद्धिकता का सहारा लिया है ना आरोपण है साधन रूप से नाटक का सारे कार्य दोस्तों पर चलता है अनुष्कामध्ययुगीन कमरा और नगरपालिका का हाल दूं नाटक के लिए विरोधाभास की जनगणना अतिथियों को एकदम उपयुक्त है वरना दूरी और दरार दिखाने का काम करते हैं अंतिम घड़ी के में रखकर उसे जिस तरह नाटक की मूल चेतना जोड़ दिया गया है। नाटककार ने चित्रों की भाव भंगिमा छोटे-छोटे संवाद मधुर भाषा एवं उर्दू भाषा के प्रयोग का अधिकांश प्रभाव दिखाया है। जब हम उसको महाराज के दरबार में ले जाया जाता है तब महाराज का आदेश होता है की इस निष्कर्ष :-

को और घड़ियों को बनाने की इजाजत नहीं होगी चारों ओर सन्नाटा छा जाता है उस आग को चुप रहने का इशारा किया जाता है तब महाराज बोलते हैं"अगर हमारी राजधानी की रौनक बढ़ाने के लिए इस गाड़ी को बनाया गया है तो फिर दूसरी गाड़ी बनाने का मतलब यह आदमी सिर्फ एक ही घड़ी बनाएगा और यही वह घड़ी होगी जिसे वह बना चुका है इसे कोई भी और कढ़ी बनाने की इजाजत नहीं होगी अगर हमें पता चला कि यह कोई और गाड़ी लुक छुप कर बना रहा है तो इसे हम कड़ी सजा देंगे मगर इस आदमी का कोई ऐतबार नहीं है 17 साल

तक यह घड़ी बनाता रहा और हमें इसकी खबर तक नहीं हुई चुपचाप इस गाड़ी को नगर पालिका पर लगा दिया गया हमें बाद में खबर दी गई हमें उस वक्त बताया गया जब गाड़ी लग चुकी थी ऐसे आदमी पर कड़ी निगरानी रखने की जरूरत है। ९ यह मनोदशा राजा के माध्यम से प्रस्तुत करना फानूस की काबिलियत पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करता है जो कि आज हर समाज में हर वर्ग में हर धर्म में गरीबों में इतने कलाकार बैठे हुए हैं उनको भी यदि अवसर मिले तो हानूश की तरह बहुत कुछ कर सकते हैं। हंस परेशान हो जाता है उसकी परेशानी कम किस प्रकार हो एक कलाकार व्यक्ति की मनोदशा जब उस को अपमानित किया जाता है किस प्रकार होती है वह काट दिया के माध्यम से पता लग सकता है। कहता है हम हाथ पर हाथ रख कर भी तो नहीं बैठ सकते का क्या हाल उसके लिए यहां से चले जाना बहुत जरूरी है उसे ऐसी जगह पर ले जाना चाहिए जहां पर घड़ी की आवाज ही नहीं सुन पाए। खाता कहती है नहीं तुम गलत कहते हो तुम कुछ नहीं जानते क्या तुम समझते हो गाड़ी की आवाज सुने बिना मैं जी नहीं सकता घड़ी को लेकर भड़क उठता है मन ही मन छटपटाता है।उसे तोड़ने की कोशिश भी करता है पर उसकी जान घड़ी में ही है उसकी आवाज सुनकर ही बिजी रहा है तुम उसे किसी दूसरी जगह ले जाओगे तो उसे लगेगा जैसे उसे अंधे कुएं में फेंक दिया गया है।९कात्या के माध्यम से विष्णु साहनी जी ने घड़ी का प्रथम आत्मक स्वरूप उसके मन उसकी आत्मा उसकी सांस से जोड़ने का प्रयास किया है जो उसकी इस मनोदशा का प्रतीक बनता है। टी बीच में खराब हो जाती है उसका लीवर खराब हो जाता है उसको पादरी पर शक होता है। उधर हाल उसको ढूंढा जाता है हम उस कहां गया यह घड़ी बंद हो गई है अधिकारी भर उसका पीछा करते हैं मेकअप वगैरह से पूछते हैं। मैं कुछ भी नहीं कहना है इस लंबे सफ़र का एक और पढ़ा खत हुआ खाया आने-जाने अभी कितने पड़ाव भाटी है पर मिला नहीं करो का क्या चल लगी है मुझे अफसोस नहीं किसी बात की चिंता नहीं अब मुझे विश्वास है गाड़ी

बंद नहीं होगी कभी बंद नहीं होगी।१० विष्णु साहनी जी ने अनुज नाटक के माध्यम से युवा पीढ़ी को मार्ग प्रशस्त करते हुए बताया है कि व्यक्ति चाहे गरीब हो अमीर हो लेकिन उसकी प्रतिभा कभी सुखी नहीं रह सकती उसका गुण सोता ही आता है और वह व्यक्ति अपने समाज देश और राष्ट्र के लिए सब को समर्पित कर देता है वह जीवन धन्य हो जाता है और उसको समाज के द्वारा राष्ट्र द्वारा पुरस्कृत एवं प्रशिक्षित किया जाता है। उस को आर्थिक सहायता मिलती है पुरस्कार मिलता है किंतु हारूफ जब बूढा हो जाता है तो उसका जुनून समाप्त हो जाता है वह जो कुछ करना चाहता था वह नहीं कर पाता है और बादशाह सलामत उस पर नाराज हो जाते हैं गाड़ी की बंद होने पर भी कुछ सोच कर जो इसे कहते हैं चलिए साहब मैं आपके साथ चलूंगा आपके पीछे-पीछे आपके कदमों में लौटता हुआ क्योंकि मैंने उस घड़ी को बनाया था बादशाह अपने दिल की मुराद पूरी करें मैं अपने दिल की और चला जाता है इस प्रकार हां उसने अपना सब कुछ चेक करके और एक घड़ी के लिए अपने परिवार समाज सभी को आश्चर्यचकित किया है। यह सुनकर हाउस पहले पुस्तक सताता है आसनसोल में कहता है महाराज हुक्म सर आंखों पर मैं हाजिर हूं अब मेरा चाहे जो मुझे चिंता नहीं है जय कपीस रात से इस शहर से चला गया तो अच्छा ही हुआ अब मेरे मरने पर भी घड़ी का भेज जिंदा रह सकेगा और सबसे बड़ी बात है कि आविष्कार जीता रहे। तुम साहनी जी ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण के माध्यम से नए नए आविष्कारों को प्रेरणा दी है तथा अपने देश को आगे बढ़ने के लिए घड़ी नहीं विभिन्न प्रकार के औजारों हथियार बनाने में जो कलाकार हैं उनको पुरस्कार देने की भी बात कही है और यह सत्य भी है कि जो देश को आगे बढ़ाता है जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति है जो अब इस करता है जो साइंटिस्ट है उसको पुरस्कार मिलना चाहिए क्योंकि वह हमारे देश की शान हैं। संवाद दृषटव्य है।

[अन्धे भिखारी का प्रवेश]

कोतवाल : यह तुम क्या गा रहे हो ?

भिखारी: एक कवित्त है मालिक, वही गा रहे हैं । कोतवाल : किसने तुम्हें यह गीत सिखाया है ? भिखारी : सिखाया तो किसी ने नहीं । दो-एक दफेकबीरदास के मुँह से सुना तो कण्ठ हो ढछगया ।

कोतवाल : तुम कबीरदास के बहुत से कवित्त जानते हो ? भिखारी: दो-तीन ही जानते हैं माई-बाप । ज्यादा तो नहीं । कोतवाल : कोई और कवित्त सुनाओ ।

भिखारी : उत्साहित होकर अच्छा मालिक !

'वही महादेव, वही मुहम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये । को हिन्दू को तुरक कहावै, एक जिमी पर रहिये । वेद कितेब पढ़े वे कुतबा, वे मुल्ला वे पाण्डे । बोगी जोगी नाम धरायो इक माटी के भाण्डे ।। कहहि कबीर वे दोनों भूले११

-

संदर्भ ग्रंथ सूची

१कबीरा खड़ा बाज़ार में पृ १५

१भीष्म साहनीहानुश पृ१८

२ सारिका नवम्बर १९७९ भीष्म साहनी के साथ असगरबजाहत की बातचीत पृ९

३ भीष्म साहनीहानुश पृ१९

४भीष्म साहनीहानुश पृ३०-३१

५ वही पृ ३५

६ वही पृ६२

७वही पृ ६७

८ वही पृ८५

९ वहींपृ१०७

१० वही १२९

११कबीरा खड़ा बाज़ार में पृ ३८